O.P. JINDAL GLOBAL INSTITUTION OF EMINENCE DEEMED TO BE UNIVERSITY
A Private University Promoting Public Service

I.D.E.A.S. OFFICE of INTERDISCIPLINARY STUDIES

हरियाणा की आवाज़

HARYANA KI AWAAZ Volume II Issue II

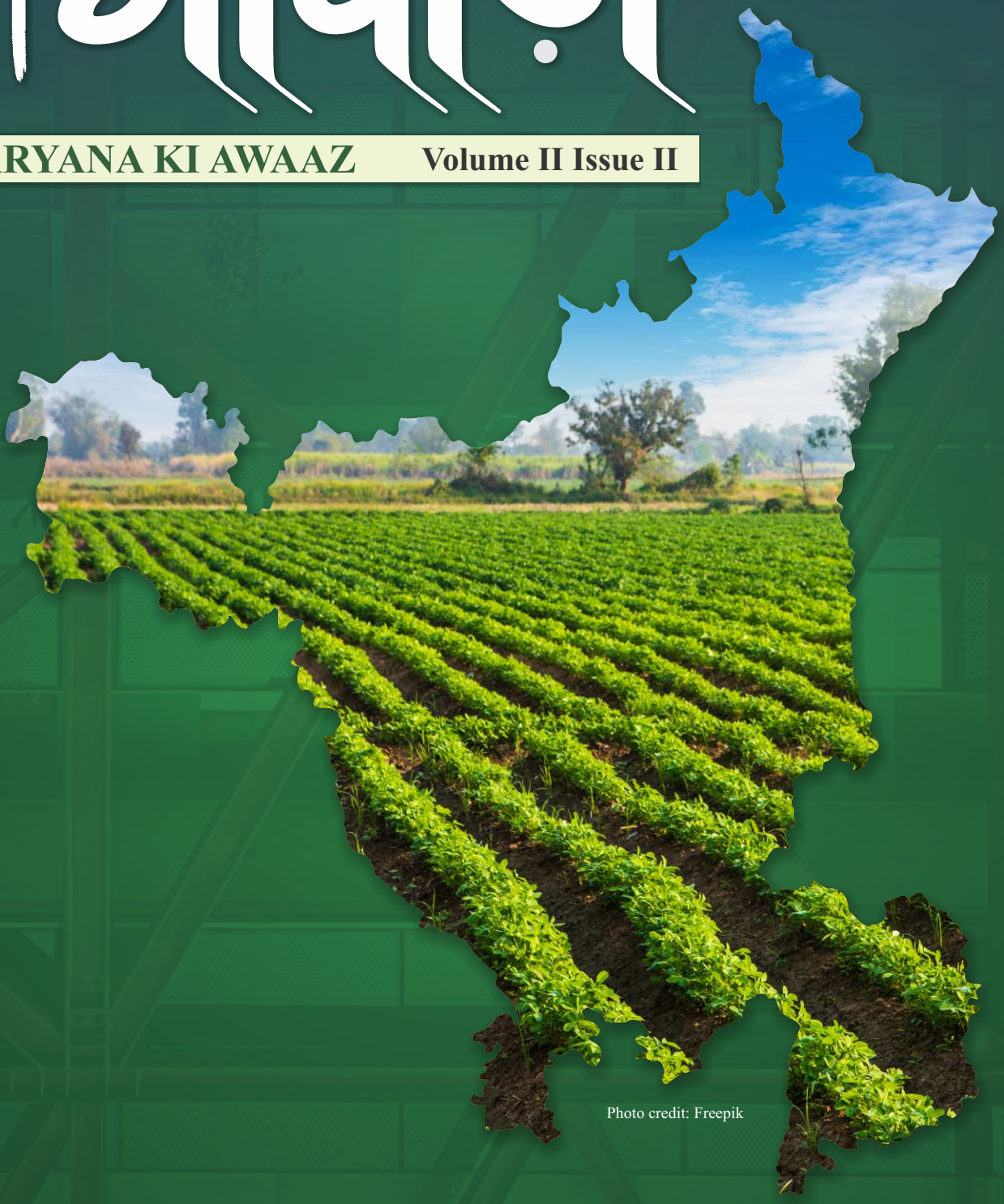

Photo credit: Freepik

आभार

हम इस अंक के सम्पादन, रूपरेखा और प्रस्तुति में योगदान के लिए प्राची हुड्डा को धन्यवाद देना चाहते हैं। इस अंक के हिंदी अनुवाद के लिए **वीना हुड्डा** के सहयोग को भी धन्यवाद देते हैं।

हम **श्रीमति प्रितम सिवाच** को भी धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने हमारे साथ अपना समय और अनुभव साझा किया।

हरियाणा के नाम

प्राची हुड्डा

क्यूरेटर

हरियाणा के बारे में हमेशा एक सामान्य धारणा रही है: देहाती, अत्यधिक पितृसत्तात्मक और महिलाओं के प्रति हिंसक। इसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र और इसके लोगों का एकपक्षीय चित्रांकन हुआ है। यह चित्रांकन इस क्षेत्र की सामाजिक और सांस्कृतिक विशेषताओं व बहुमुखी विचारधारा को स्पष्टता से उजागर नहीं करता। साथ ही मास मीडिया और बुद्धिजीवी वर्ग भी यहाँ के लोगों के अनुभवों और सामाजिक भिन्नताओं को समझने में निष्फल रहे हैं।

"प्रगतिशील" विश्वविद्यालयों में मैंने खुद ये अनुभव किया कि इस क्षेत्र से आने वालों को एक सामान्य धारणा का सामना करना पड़ता है। यह मुख्यतः "तुम हरियाणवी नहीं लगते" या "तुम हरियाणवी की तरह बात नहीं करते" जैसी टिप्पणियों और व्यंग्यों के रूप में होता है। यह भी आंशिक रूप से बॉलीवुड में हरियाणा के लोगों के चित्रण से प्रभावित है, जहां अभिनेता उस भाषा को बोलने की कोशिश करते हैं जो हरियाणा में बोले जाने वाली विभिन्न बोलियों से कहीं भी मेल नहीं खाती। इस सामान्य रूप से किये जाने वाले गलत चित्रण (जो केवल वे लोग करते हैं जो इस क्षेत्र से नहीं हैं) को चुनौती भी दी जा रही है। अब वर्तमान समय में कुछ बुद्धिजीवी और युवा वर्ग द्वारा इन धारणाओं को चुनौती देने और जमीनी स्तर की आवाजों के लिए जगह बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

इस संदर्भ में, यह मासिक अंक "हरियाणा की आवाज़" इस क्षेत्र और इसके लोगों के बारे में अत्यधिक सरल धारणा को चुनौती देने की एक छोटी सी पहल है, जो हरियाणा के लोगों को अपनी कहानियाँ और अनुभव साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसका उद्देश्य उन्हें उन सक्रिय कर्ता के रूप में प्रस्तुत करना है जो वे हमेशा से रहे हैं, लेकिन जिसके लिए उन्हें कभी पर्याप्त पहचान नहीं मिल पायी। प्रत्येक अंक हरियाणा के सांस्कृतिक विशेषताओं और इसके विविध सामाजिक समूहों के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डालेगा।

मैं ओ.पी. जिंदल ग्लोबल विश्वविद्यालय (JGU) के ऑफिस ऑफ़ इंटरडिसिप्लिनरी स्टडीज (IDEAS) की आभारी हूं, जिन्होंने इस पहल को समर्थन प्रदान किया।

वॉल्यूम II

स्पोर्ट्स स्टोरीज़ ऑफ़ हरियाणा

अंक II

प्रीतम सिवाच स्पेशल

यह अंक हमारे अन्य अंकों से थोड़ा हट कर है। साधारणतः, हरियाणा की आवाज़ का हर अंक किसी एक विषय पर आधारित तीन प्रभावशाली कहानियाँ लेकर आता है। लेकिन यह अंक अलग है। इसमें एक ही कहानी पर फोकस किया गया है। और वह है प्रीतम सिवाच की कहानी।

जो कोई भी हरियाणा या देश के हॉकी जगत की थोड़ी भी जानकारी रखता है, उसे उनके नाम का परिचय देने की ज़रूरत नहीं है। वह मैदान पर जितनी मजबूत खिलाड़ी रहीं, उतनी ही समर्पित और प्रभावशाली कोच भी बनीं। उन्होंने न सिर्फ हरियाणा में हॉकी को एक नई दिशा दी, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी खेल को गहराई से प्रभावित किया। यह अंक उन्हें समर्पित है।

श्रीमति सिवाच के लिए मेरे मन में प्रशंसा और उनके लिए अधिक जानने की जिज्ञासा के कारण इस विशेषांक को लिखा गया है। काफी समय से उनकी यात्रा के बारे में लिखने का विचार था, और इस अंक के माध्यम से मैं उनके संपर्क में आयी। मैं यह बात जितनी बार कहूँ, कम ही होगी - वह जितनी महान खिलाड़ी हैं, उतनी ही ज़मीन से जुड़ी, विनम्र और अपनापन देने वाली इंसान भी हैं। इसी वजह से यह अंक कुछ अलग सा है - कई मायनों में ज्यादा खास।

यह अंक इस खंड में एक माध्यम है। पिछला अंक 1970 के दशक की उन महिलाओं की कहानियों पर केंद्रित था, जिन्होंने उस दौर में खेल को चुना, जब ऐसा करने की कोई कल्पना भी नहीं करता था। आने वाले अंक आज की युवा पीढ़ी की बात करेंगे, वे खिलाड़ी जो उस हरियाणा में बड़े हुए हैं, जहाँ खेल अब जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। यह अंक उस यात्रा के बीच की कड़ी है। प्रीतम सिवाच उस पीढ़ी से हैं, जिन्होंने इस पुल को बनाया, एक ओर पुराने संघर्षों की जड़ें, और दूसरी ओर आने वाले कल के सपनों को आकार देती हुईं।

यहाँ एक बात स्पष्ट करना आवश्यक है। किसी एक व्यक्ति को पूरा अंक समर्पित करना यह बिल्कुल नहीं कहता कि बाकी कहानियाँ कम महत्वपूर्ण हैं। हरियाणा की आवाज़ की सोच कभी भी ऐसी नहीं रही है। इस पत्रिका की बुनियाद ही इस विश्वास पर रखी गई है कि हर कहानी - खासकर वे जो साधारण सी लगती हैं और अक्सर अदृश्य रह जाती हैं - बहुत मायने रखती हैं और उनको लिखा जाना बहुत ज़रूरी है। यह अंक, भले ही अपने फॉर्मेट में अलग हो, उस सोच से पूरी तरह जुड़ा हुआ है।

यह एक ऐसी महिला की कहानी है जिसने न केवल हॉकी खेला बल्कि सही मायने में हॉकी के अर्थ को समझाया।

Courtesy: https://pritamsiwachhockey.org

प्रीतम सिवाच

मैं श्रीमति प्रीतम सिवाच से अगस्त में एक दिन भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI), सोनीपत में बातचीत के लिए मिली। मैंने उन्हें एक हफ्ता पहले संपर्क किया था, उम्मीद थी कि उनसे I.T. चौक के पास स्थित उनकी हॉकी अकादमी में मुलाकात हो जाएगी, लेकिन समय का तालमेल नहीं हो रहा था क्योंकि वो SAI में भी खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देती हैं। अंततः तय हुआ कि SAI में ही मुलाकात करते हैं, मैं शाम को थोड़ी देर से पहुंची: उस दिन सीनियर खिलाड़ी आराम कर रहे थे और मैदान पूरी तरह से जूनियर/युवा खिलाड़ियों के लिए खुला था, करीब 40 खिलाड़ी थे और यह उनकी कई बैचों में से एक बैच था, जिसे वह प्रशिक्षण देती हैं। वह एक साथ कई काम कर रही थीं – युवा कोचों और खिलाड़ियों को निर्देश देना कि किस तरह से खिलाड़ियों को व्यवस्थित कर ट्रेनिंग दी जाए, कुछ खिलाड़ियों के अंतरराष्ट्रीय दौरे की व्यवस्थाएं देखना और इन सबके बीच मुझसे बातचीत करना।

मैंने बातचीत की शुरुआत उनके सफर के बारे में जानने से की। श्रीमति सिवाच का जन्म हरियाणा के गुरुग्राम ज़िले के झाड़सा गांव में हुआ। उन्होंने गांव के सरकारी स्कूल में पढ़ाई की, जहाँ बच्चे खो-खो, कबड्डी और हॉकी जैसे अलग-अलग खेल खेला करते थे, जबकि मैदान ठीक से बना भी नहीं था। स्कूल में लड़कियों की एक अच्छी हॉकी टीम थी: मजबूत, फुर्तीली और अच्छी कद-काठी वाली। पीटीआई शुरू में सिवाच को टीम में लेने से हिचक रहा था क्योंकि न तो वो बहुत फुर्तीली थीं और वजन भी ज्यादा था। उन्हें दो-तीन बार मना किया गया, लेकिन फिर वो अपनी दादी को साथ लेकर आईं, दादी ने जाकर डांटा और कहा कि उनकी पोती को भी हॉकी स्टिक दी जाए ("वो भी साइड में खेलेगी")। और वहीं से उनकी हॉकी यात्रा शुरू हुई। तब वह छठी कक्षा में थीं। उन्हें पढ़ाई में ज्यादा दिलचस्पी नहीं थी, बताती हैं कि वो अक्सर खिड़की से बाहर देखती थीं जहां दूसरे खेल रहे होते, और टीचर नाराज़ हो जाया करते थे।

मैंने पूछा कि क्या उस समय उनके माता-पिता और परिवार वालों को उनके खेल में आने से कोई आपत्ति थी? शुरुआत में तो खेल को उनके आलसीपन, मोटापे और घर के कामों में रुचि न लेने के समाधान के रूप में देखा गया। स्कूल का मैदान सिर्फ इसलिए अच्छा लगा ताकि वो थोड़ी सक्रिय हो जाएं और फिट रहें।

उनके पिता ट्रांसपोर्ट विभाग में इंस्पेक्टर थे, और भाई वीरेंद्र कुमार एक पहलवान जिन्होंने 1995 में राष्ट्रमंडल खेलों में रजत पदक जीता। परिवार में वे पहले थे जो खेल से जुड़े थे। उनके भाई को उनकी खेल में दिलचस्पी पर थोड़ी आपत्ति थी क्योंकि उन्हें लगता था कि उनकी देखभाल में ही सारा समय और ऊर्जा लग जाएगी – हालांकि परिवार के अन्य लोग इस बात से सहमत नहीं थे।

जब प्रीतम सिवाच ने खेलना शुरू किया तो फिर पीछे मुड़कर नहीं देखा। वो बेहतर होती गईं और धीरे-धीरे गुरुग्राम में अन्य खिलाड़ियों के साथ जाकर ट्रेनिंग लेने लगीं। घर से एक तय राशि मिलती थी, जिसमें आना-जाना और अन्य खर्चों को संभालना होता था। कई बार पूरा खर्च किसी खाने की चीज़ पर खर्च हो जाता, और फिर गांव के किसी जान-पहचान वाले के साथ लिफ्ट लेकर आना पड़ता।

समय के साथ उनके साथ की अधिकतर खिलाड़ियों की शादी हो गयी, लेकिन उन्होंने सामाजिक दबाव और तानों का सामना किया और खेलती रहीं। कई बार वो अपनी साथी खिलाड़ियों के घर जाकर उनके मां-बाप से विनती करती थीं कि बेटियों की शादी न कराएं। उसी समय उनके गांव की एक लड़की ने राष्ट्रीय स्तर पर खेला, जिससे उनमें देश के लिए खेलने की आकांक्षा और बढ़ गई। वह उस लड़की के पहनावे – इंडिया का ट्रैक सूट, जूते – को गौर से देखतीं और उसकी तरह बनने की कोशिश करतीं।

नौंवी कक्षा में थीं जब उन्हें राष्ट्रीय कैंप के लिए चुना गया। यह उनके लिए बिल्कुल नया अनुभव था , वहाँ के कोच ने उनकी मदद की और एक प्रसिद्ध कंपनी से अनुबंध करवा दिया।

उसी समय उनकी बड़ी बहन की शादी हो रही थी और उनकी शादी की भी चर्चा चल रही थी। उन्होंने कुछ और समय मांगा (यहां तक कि घर से भागने की धमकी भी दी)। जल्द ही उन्हें जूनियर इंडिया टीम में भी जगह मिल गई। यह 1991-92 की बात है, जब उन्हें मलेशिया में आयोजित टूर्नामेंट में 'सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी' का पुरस्कार मिला। गांव वालों ने उनकी वापसी पर उनका सम्मान किया। वो केवल 17 साल (बारहवीं में) की थीं जब उन्हें कई सरकारी नौकरी के प्रस्ताव मिले: चूंकि वह अपना गांव छोड़ना नहीं चाहती थीं, इसलिए उन्होंने दिल्ली में भारतीय रेलवे की नौकरी जॉइन की।

नौकरी मिलने के बाद दोबारा शादी की बात चली, जिसे उन्होंने फिर टाल दिया। फिर 22-23 साल की उम्र में उन्हें अर्जुन पुरस्कार मिला। इसी दौरान उनकी शादी हुई। वह राष्ट्रीय टीम में 8 साल से खेल रही थीं और उनके पति भी हॉकी खिलाड़ी थे जो रेलवे में कार्यरत थे। उनके पति, कुलदीप सिवाच, स्वयं भी काफी प्रसिद्ध खिलाड़ी रहे हैं। शादी के बाद कुलदीप जी ने एक अनोखा निर्णय लिया – उन्होंने खुद खेल छोड़ने का फैसला किया ताकि प्रीतम जी खेलती रहें। उन्होंने परिवार की ज़िम्मेदारी उठाने का निर्णय लिया और प्रीतम जी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया।

2000 में उनका पहला बेटा हुआ – यशदीप, जो अब एक सफल राष्ट्रीय स्तर का हॉकी खिलाड़ी है। बच्चे के जन्म के एक साल बाद ही प्रीतम जी ने दोबारा प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया। उन्होंने अपना वजन कम किया। उनके पति ने ही उन्हें ट्रेनिंग दी और दोबारा फिट बनाया। उन्होंने सिर्फ 4 महीनों में अपना वजन 74 किलो से 54 किलो कर लिया। उनका बेटा 4 महीने का था जब वो कैंप के लिए बंगलुरु चली गईं। उन्होंने इंग्लैंड में हुए राष्ट्रमंडल खेलों में हिस्सा लिया, जहाँ भारतीय टीम ने 2000 में गोल्ड मेडल जीता। उनकी सास ने विशेष सहयोग दिया और बच्चे की देखभाल में मदद की। उनके पति ने दिल्ली से सोनीपत ट्रांसफर ले लिया ताकि परिवार की देखभाल बेहतर ढंग से कर सकें।

सिवाच दंपति की एक बेटी भी हुई – कनिका, 2007 में। और प्रीतम जी ने तब भी खेलना जारी रखा, ओलंपिक क्वालिफायर्स में भी हिस्सा लिया।

2002 से 2007 के बीच उन्होंने कोचिंग शुरू की – उद्देश्य था सोनीपत की लड़कियों को हॉकी खेल में योगदान देना। उन्होंने 2004 में कालूपुर चुंगी, रोहतक रोड के पास अपनी अकादमी शुरू की। जिन मुश्किलों से वह खुद गुज़री थीं, वह नहीं चाहती थीं कि अगली पीढ़ी की लड़कियां भी उनसे गुज़रें। उनकी अकादमी से अब तक 40 से अधिक लड़कियां अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेल चुकी हैं और लगभग 70-80 को सरकारी नौकरियां मिल चुकी हैं। यह अकादमी पहली थी जो सिर्फ लड़कियों के लिए शुरू की गई थी। आज भी वह उन्हीं लड़कों को प्रशिक्षण देती हैं जिनकी बहनें उनके पास ट्रेनिंग लेती हैं – "कोई बहन है तो ले आ, फिर ट्रेन करूंगी।"

उन्हें 2021 में द्रोणाचार्य पुरस्कार मिला। जब उनकी अकादमी ने 'खेलो इंडिया' में SAI की टीम को दो बार हराया, तब उन्हें SAI में भी कोचिंग के लिए बुलाया गया।

हॉकी अब पूरे परिवार का हिस्सा बन गई है – यशदीप और कनिका अब राष्ट्रीय टीम में खेल रहे हैं और बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं।

इतना कुछ हासिल करने के बाद भी एक सपना ऐसा है जिसे प्रीतम सिवाच अब भी पूरा होते देखना चाहती हैं – कि उनकी खिलाड़ी ओलंपिक में पोडियम तक पहुंचें।

JGU *at a* GLANCE

16000+ Students — FEMALE 51% — MALE 49% — UNDERGRADUATE 80% — MASTERS/DOCTORAL 20%

1100+ Faculty — FEMALE 55% — MALE 45%

35 Average age of Faculty Members

45% Faculty Members are Alumni of the top **200** Global Universities

4000+ Faculty & Administrative Staff from **50** countries

12000+ Alumni Network World-Wide

28 Indian States & Union Territories represented by Students

12 SCHOOLS

50+ Programmes

30+ Undergraduate Programmes
20+ Postgraduate Programmes
Doctoral Programme

- Jindal Global Law School — *India's First Global Law School*
- Jindal Global Business School — India's First Multi-Disciplinary Global Business School
- Jindal School of International Affairs — *India's First Global Policy School*
- Jindal School of Government and Public Policy — *India's First Public Policy School*
- Jindal School of Liberal Arts & Humanities — *India's First Transnational Humanities School*
- Jindal School of Journalism & Communication — India's First Global Media School
- Jindal School of Art & Architecture
- Jindal School of Banking & Finance — India's First Global Finance School
- Jindal School of Environment & Sustainability
- Jindal School of Psychology & Counselling — *India's First Transdisciplinary Psychology School*
- Jindal School of Languages & Literature
- Jindal School of Public Health & Human Development

RESEARCH

8500+ Publications

60+ Interdisciplinary research centres

6 Research & capacity building institutes

- JILDEE — Jindal Institute of Leadership Development and Executive Education
- Jindal Institute of Behavioural Sciences
- IIHEd — International Institute for Higher Education Research & Capacity Building — O.P. Jindal Global University
- Jindal India Institute — Propelling the Indian Century — O.P. Jindal Global University
- Jindal Institute of Haryana Studies
- MJAS — Motwani Jadeja Institute for American Studies — O.P. Jindal Global University

INTERNATIONAL COLLABORATIONS

525+ Collaborations with International Universities & Higher Education Institutions

10 Forms of Global Partnerships

80+ Countries & Regions

200+ Faculty & Student Exchange Collaborations

75+ Countries represented by Students

RANKINGS & RECOGNITIONS

QS World University Rankings by Subject 2025:
- Ranked No.1 in India — Law & Legal Studies
- Ranked No.1 Private University in India — Arts & Humanities
- Ranked No.1 Private University in India — Politics & International Studies

Times Higher Education:
- Ranked No.1 in the World — Times Higher Education Online Learning Rankings 2024
- Ranked among top 101-200 SDG 12 & 16 globally — Times Higher Education Impact Rankings 2024

Conferred the status of an **INSTITUTION OF EMINENCE** by the Ministry of Education, Government of India

O.P. JINDAL GLOBAL UNIVERSITY
Institution of Eminence Deemed to be University
A Private University Promoting Public Service

www.jgu.edu.in

Sonipat-131001, (NCR of Delhi)

JGU - An Initiative of Jindal Steel & Power Foundation